धर्म जीवन

अप्रैल - 2014

* देवात्मा फरमाते हैं
* पाप मैल हर्ता
* गलतियों को नहीं छिपाएं
* मैं महा दुखों से बच गया
* योग्यता की क़दर
* सच्ची - पात्रता
* कल्याण सत्संग और माता पिता दविस
* एक पत्र

देवात्मा फरमाते हैं

अंह अनुरागी जन कभी भी अपने विषय में यह विचार नहीं कर सकता कि मुझ में कौन कौन से आत्मिक रोग हैं? वह यह समझता है कि मैं जो कुछ जानता हूं, वह ठीक जानता हूं। वह सत्य को लात मारता है। वह हर समय झूठ में रहना चाहता है। उसकी बुराई पर यदि कोई चोट लगाई जावे, तो वह सांप की मानिन्द फन निकालता है। अंह अनुरागी के लिए इस दुनियां और अगली दुनिया में केवल पतन ही पतन है (देवत्वसिंह जी जब अंह अुनराग को आत्म घातक रूप में देखकर उससे मोक्ष पाने के संग्राम में लग गये थे, तभी उनकी बेहतरी का ठीक क्रम चल सका था) हमारे संबंध में जिनके भीतर कुछ भी घृणा पैदा हो जाती है, अथवा जो लोग हम से फट जाते हैं, वह हमारे सम्बन्ध में कोई सच्चा साधन नहीं कर सकते। हां यदि पहले कभी वह ऐसा साधन करते भी हों, तो ऐसी अवस्था के आने पर उनका वह साधन बन्द हो जाता है। ऐसे लोगों को दूसरों की कोई खूबी देखना पसन्द ही नहीं होता, इसलिए उनके हित के सब दरवाजे बन्द रहते हैं।

नेचर का यह नियम है कि जिस चीज़ को तुम प्रेम करोगे, उस के तरफदार बन जाओगे। मनुष्यों में जो सबसे बड़ा नीच अनुराग फैला हुआ है, वह अंह अनुराग है। इस अंह अनुराग या 'मैं' के खिलाफ यदि किसी को कुछ कहो, तो वह उलट पुलट हो जाता है। वह दूसरे के सामने घटिया नज़र आना नहीं चाहता। उसकी तारीफ करो, तो वह खुश मालूम होता है, उस का चेहरा फूल की न्याईं खिल जाता है, उसके खिलाफ कहो, तो चेहरा फक़ हो जाता है, रंग फीका पड़ जाता है। हमने जो उसकी 'मैं' पर सदमा लगाया, इस सदमे को खाकर वह हमें घूरता है। देवात्मा के भीतर 'मैं' का प्रेम कुछ भी नहीं है और न ही उस को किसी आदमी के लिए कोई प्रेम है। फिर तुम यह कह सकते हो कि आप हम नीच आदमियों से दुःख पाते हैं, आप हमें छोड़कर भाग क्यों नहीं जाते? इसलिए कि नेचर हमें भागने नहीं देती। हम रात भी तड़पते रहे हैं, फिर भी यहां पर आकर बैठ गए हैं। तुम्हारा भला करने में दुःख मिलता है, रोग मिलते हैं, परन्तु फिर भी नेचर यही कहती है कि तुम बेशक रोगों को अपने सिर पर लो, परन्तु तुम्हें भला करना ही होगा। मनुष्य न सचाई चाहता है न भलाई। नेचर की इजाज़त नहीं कि वह गरम मसाले खाए परन्तु वह खाता है। नेचर कहती है कि नशे न पीओ वह हानिकारक हैं, परन्तु वह कहता है कि मुझे तो बड़ा रस आता है। नेचर कहती है कि नमक न खाओ, वह हानिकारक है। पशु पक्षी बिना नमक के जीते हैं। देवात्मा इतने बूढ़े होकर भी बिना नमक के जीते हैं। परन्तु वह कहता है कि मैं नमक नहीं छोड़ सकता हर एक नीच अनुराग का पक्षपाती बनकर वह इसी प्रकार का जवाब देने के लिए लाचार है।

धर्म जीवन

खण्ड 27 अंक 4
अप्रैल – 2014
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

पाप मैल हर्ता

नेचर का विकास के क्रम का नियम अति वचित्र है। विकास क्रम में जो जो विकास भौतिक जगत में आया है, वनस्पति जगत में आया है, पशु वा मनुष्य जगत में आया है, यदि हम गंभीरता से देखें तो यह सब अचम्भित करने वाला है।

मनुष्य जगत के अन्दर, जहां प्रत्येक व्यक्ति सुखों का आशिक है, सुख परायण है, पाप परायण वा मिथ्या परायण है, वहां पूर्ण हित स्त्रोत, पूर्ण शुभ सूरत, पूर्ण शुभ अनुरागी और पूर्ण सत्य के परवाने, सत्य के शैदाई, देवात्मा का विकास पाना ही महा अचम्भित करने वाली घटना है। नया युग लाने वाला व्यक्तित्व है। यह अति महा अद्भुत घटना है। परम पू० भगवान देवात्मा के साथ जुड़ी प्रत्येक वस्तु ही अचम्भित करने वाली है। परम पू० भगवान की आत्म प्रकाशक ज्योति, पाप नाश करने वाली शक्ति अमृत स्वरूप आत्म तेज, सब लासानी वस्तुएं हैं। भगवान का रूप, शिक्षा लक्ष्य और कारज सब कुछ अनुपम हैं। यह सब कुछ न पहले कभी था, न कहीं है, न ही हो सकता है, यह सब कुछ ही अद्वितीय और विस्मय जनक है।

आम मनुष्य को यह सोझी तो है कि पाप क्या होता है? हानि, दुख और नाश करने वाली क्रियाएं पाप हैं। पाप छोड़ देने से आदमी सुधर जाता है, भला जीव बन जाता है, यह सोझी भी मनुष्य को और संसारिक धर्मों को भी है। परन्तु पापों से मुक्त होने, पाप कर्मों को तिलांजली देने के बाद भी मनुष्य हृदय गन्दा होता और रहता है। पिछले पापों की मैल हृदयों के भीतर उसी प्रकार भरी रहती है, हां नई मैल वा गन्दगी पैदा होनी बन्द हो जाती है, परन्तु पिछले पापों की सड़ांद ज्यों की त्यों हृदय को विकार से लथपथ रखती है और पाप छोड़ने से भी आगे मनुष्य के विकास में पूरा बाधक बनी रहती है। यह नई रोशनी है और नई सचाई है, जो परम पू० भगवान देवात्मा ने देखी और दर्शाई है। मनुष्य मन हृदय या रूह सम्बन्धी भगवान देवात्मा की रोशन कर्ता सब सचाईयां ही अमुल्य और अचम्भित करने वाली हैं।

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज ने मन की मैल को अति सुन्दर घटना द्वारा दर्शाया है, उन्होंने लिखा है कि जिस मकान के भीतर गधे बांधे हुए हों, गधे वहां से निकाल देने से उनकी लीद आदि भी उठाई गई हों, फिर भी उस स्थान के भीतर लीद वा पिशाब की बदबू काफी देर तक रहती है, उसी प्रकार हृदय के भीतर पापी जीवों और पापों का वास रहा हो, उस हृदय में से पाप कर्म छट जाने के बाद भी पापी जनों के हृदय उस की बदबू और सडांद गधों वाले स्थान की तरह बाकी भरी रहती है। आज तक किसी भी धार्मिक जन को विकार या हृदय की मैल क्या रूप

रखती है, इसका ज़रा सा भी अनुभव नहीं था और नहीं है। परम पू० भगवान देवात्मा ने हृदय की मैल की परतों को रोशन कर दिया है और उन सब पापों की मैल की परतों को धोने का कारज भी कर रहे हैं।

हृदय का अन्धा और अन्धेर ग्रस्त होना, हृदय या मन का कठोर सख़्त जान पत्थर समान होना, यह सब पाप, विकार की परतें हैं।

परम पू० भगवान देवात्मा के देव रूप के भीतर ऐसी लासानी और अचम्भित करने वाला तेज या अमृत है, जिसकी अमुल्य तासीरों की बौछार अधिकारी और कुछ योग्य हृदयों के न केवल महा घृणित पाप कर्म नाश कर देती हैं, बल्कि बार बार इस बौछार पड़ते रहने से वह पिछले पापों की गन्दगी और मैल को भी धो देती हैं। यह मानव हृदयों पर अचम्भित कारज करने की पूर्ण क्षमता रखती हैं। केवल उक्त देव तेज रूपी अमृत कैसे पापों का नाश करता है और इस प्रकार पिछले पापों की मैल धोता है और इसके ठोस और सौ प्रतिशत सच्चे कुछ उदाहरण पेश करते हैं।

हरियाणा अम्बाला में तहसील रायपुर रानी है, वहां के राजघराने के पुरोहित पंडित परिवार के बहुत सम्मानित व्यक्ति थे। यौवन काल में ही श्री गोबिन्द राम जी पुराने समय में किसी काम से एक बार लहौर में जिस पंडित के पास ठहरे थे, उनके साथ लहौर में परम पू० भगवान देवात्मा के व्याख़्यान सुनने का सौभाग्य मिला। स्वामी जी उस संगत में बैठकर बहुत प्रभावित हुए। वहां जाकर उन्होंने अनुभव किया कि मेरी सोच और दृष्टी में बड़ा फर्क पड़ रहा है। पहले जैसे वह नौजवान खूबसूरत स्त्रियों में जगह जगह ललचाई नज़रों से देखने के लिए बेबस और बेताब हो जाते थे और खुश हो जाते थे, अब उनकी नज़रें खूबसूरत औरतों को देखने के लिए इन्कार क्यों करती है, अब नज़र झट उनकी तरफ से मुड़ आती है। मैं तो काम वासना का दास था। उन्हें यह समझ आई है कि यह अन्तर उस समय से आया है, जब से मैं लहौर से आया हूं, उन महान तेजस्वी व्यक्तित्व का व्याख़्यान सुना है, उन्होंने मेरे नीच जीवन पर जादू कर दिया है। स्वामी जी धन्य धन्य हो उठे और उन्होंने धीरे धीरे परम पू० भगवान देवात्मा को जाना और समझा और वह उनके लासानी पाप जीवन मिटाने और उच्च जीवन पैदा करने वाले कारज पर फिदा हो गए। बड़ी कुर्बानी कर बहुत अच्छी सरकारी नौकरी छोड़कर उनकी पैदा की संगत के साथ सदा के लिए जुड़ गए। सारी उमर उनके मिशन के विशेष प्रचारक बनकर उनका कारज करते रहे, बहुतों के जीवन बचाए और संवारे। नीच क्रियाएं या पाप कर्म तो चले गए परन्तु पिछले पापों की मैल कैसे धोई गई। स्वामी जी वर्षों साधन करते रहे, अपने पुराने नीच जीवन को भगवान की रोशनी में देख देख कर रोते, तड़पते, शोक ग्रस्त होते रहे। अपने साधनों के अन्दर अपने आपको कोसते, भगवान के अद्वितीय अमृत से अपने आपको भान्ति भान्ति से दण्ड देते रहे। इस प्रकार भगवान की देव घृणा के प्रभाव उनको दुखी और सन्तप्त करते रहे। एक दिन उनके महान, पवित्र, कोमल बने हृदय पर भगवान देवात्मा के तेज की ऐसी बौछार पड़ी कि वह और भी पाक दुख और सन्ताप की अग्नि में तड़प उठे। भगवान के प्रभावों ने उन्हें इतना हिला दिया कि उन्होंने अनुभव किया कि लोग तो मुझे स्वामी जी, महात्मा जी, महान महान कहते रहते हैं, मेरे चरण छूते हैं, उनको क्या पता कि मैं किस प्रकार कामी, मैला, नीच वजूद रहा हूं, उन्हें ऐसी शक्ति मिली कि वह राजे के पुरोहित परिवार के प्रसिद्ध और बहुत ही सन्मानित व्यक्ति होकर अपने आप अपना मुंह काला करके भरे बाजार में बैठ गए। लोग आ आकर पूछते, स्वामी जी यह क्यों? वह बताने लगे कि भाई तुम्हें पता नहीं मैं अन्दर से ऐसा काला इन्सान था, सब

का भुलेखा दूर करने के लिए मैं अपना वास्तविक रूप जैसा था, तुम्हें दिखाना चाहता हूं। कई घण्टे स्वामी जी ने काला मुंह करके बैठने का साधन करके अपने पापों की पुरानी मैल धोई। यह है देव प्रभावों का अद्वितीय क्रिश्मा! आंख रखने वाले क्या स्वामी जी और क्या परम पू० भगवान देवात्मा के चरणों में झुक झुक कर धन्य हो धन्य हो पुकारने के लिए मजबूर वा बेबस हो गए (आज भी होते हैं)।

यह नहीं कि अकेले स्वामी जी ही काम वासना में ग्रस्त थे और नीच थे। काम वासना बेइन्तहा प्रबल ओर जोरदार शक्ति है, इसने हम सब को, हां मानव समाज में अधिकतर जनों को शिकार बनाया हुआ है, शायद ही मानव जाति में कोई ऐसा बचा हो जिसने वह करतूतें न की हो जो स्वामी जी से हुई। सच तो यह है कि स्वामी जी पश्चाताप की अग्नि में तपकर हृदय की मैल को इतना धोने में सफल हो गए और इस मात्रा में देव प्रभावों को पाने के अधिकारी बन गए हम उस मात्रा में हृदय की शुद्धि नहीं कर सके यदि हमें उस मात्रा में जोरदार प्रभावों का दान मिल सकता तो हम भी अपने मुंह काले करने का साहस जुटा सकते।

पाप की मैल, किए पापों और उनके द्वारा अपनी और दूसरों की हानि पर सच्चा दुख, सच्ची गिलानी, सच्ची शर्मसारी, सच्चा शोक और सच्चा पश्चाताप के पैदा होने और बढ़ने से हृदय की मैल धुलने लगती है और ज्यों ज्यों दुख, पछतावा बढ़ता है, शोक ग्रस्त प्राणी, हानि प्राप्त अस्तित्वों के चरणों में गिर गिरकर याचनाएं करने के लिए मजबूर हो जाता है, हानि की भरपाई करने के लिए चोरी चकारी द्वारा प्राप्त वस्तुएं वापिस करने और उचित सेवा करने के लिए बेबस होता रहता है। ऐसे अमली साधनों के लिए, जिनके साथ पाप मैल धुल सकती है और धुलती है, करने में अपनी रक्षा और भलाई कारण सच्ची खुशी महसूस करता है। यह पाक हरकत और क्रियाएं देवत्व के सूर्य्य भगवान देवात्मा के तेज की किरणें ही पैदा कर सकती हैं।

अबोधी, गंवार लोग देव समाज के रोने वाली समाज कहते हैं, जब अच्छे, भले, नेक और भद्र दिखने वाले जनों को वह अपने पापों से रोते, दुखी होते, पछताते देखते हैं, रोना, दुखी होना और पछताना उच्च जीवन के प्रतीक है, जहां पाप सम्बन्धी कोई रोना धोना नहीं, चुपचाप है वहां न कोई उच्च वातावरण है और न कोई उच्च जीवन ही सम्भव हो सकता है, यह अद्भुत पश्चाताप और हानि परिशोध के साधन केवल देव धर्म के लासानी होने के सच्चे चिन्ह हैं।

अपना मुंह काला करना किसी मनुष्य के लिए, चाहे वह कितना भी पापी, पिशाच हो, बेहद कठिन है, पुलिस भी जब अपराधी पर पापी या जिस्म फिरोशी के कर्ताओं को पकड़े फिरते हैं, वह भी अपना मुंह ढक लेते हैं ताकि हमारी किसी को पहचान न हो जाए, हमारा पता न लग जाए, हमारा मुंह दिख न जाए। बेबस होकर अपने हाथ स्वयं स्वंय मुंह काला करके बैठना विशेष बल का ही काम है। जो मनुष्य को अपनी भयानक और विनाशकारी हानि धोने के लिए मजबूर कर देता है। ज्यों ज्यों देवत्व के सूर्य का उपरोक्त ताप वा बल पैदा करने की महिमा मानवता में फैलेगी त्यों त्यों इस अमृत के अभिलाषी दौड़ दौड़ कर उनकी शरण को पाने का सौभाग्य पाएंगे।

एक जैनी साधू एक बार देव धर्म के विशेष सत्संग में आ गए। एक सत्संग में, शायद वह आखिरी सभा थी, अपना मुंह काला करके बैठ गए। आखिर में उसने बताया कि मैं चोर हूं, मैं अपने ठहरने वाले कमरे में किसी के पड़े हुए घी में प्रत्येक दिन कटोरी से घी निकाल कर खाता रहा हूं। इस ब्यान के साथ ही वह

घी के मालिक के चरणों में पड़कर क्षमा मांगने के लिए मजबूर हो गया।

एक एक प्रचारक प्रतिज्ञा करता हैं कि मैं सेहत के लिए हानिकारक वस्तुएं नहीं खाऊंगा। जब वह इसमें फेल हो गया, उस दिन वह भी अपना मुंह काला करने के लिए बेबस हो गए।

पाप मैल धोने के साधन अति महान होने के साथ साथ अत्यन्त कठिन भी हैं, परन्तु उच्च जीवन की प्राप्ति के लिए इन साधनों की कठिन घाटी अवश्य पार करनी पड़ती है। यदि किसी को हृदय की मैल धोने की स्वर्गिय सुन्दरता के दर्शन करने हों तो श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज के परिशोध के साधनों को प्रार्थना पूर्वक पाठ कर ले, तब योग्यता होने पर उसको देव धर्म के ब्रती प्रचारक की और देव धर्म की अद्वितीय संस्थापक की सच्ची असीम अज़मत का अवश्य कुछ एहसास होगा और अपने अन्दर उच्च उमंगे जन्म लेती महसूस होंगी।

बलदेव सिंह

गलतियों को नहीं छिपाएं

कोई फैसला आपने सही लिया अथवा गलत, इस बारे में खुद से सवाल करने की बजाए उसकी आलोचनात्मक समीक्षा करेंगे तो बेहतर होगा। गलतियां होना स्वाभाविक है, लेकिन उन्हें स्वीकार करना सीखें। गलतियों दोबारा न हों, इसके लिए जरूरी बदलाव लाएं। पढ़िए ऐसे ही टिप्स हार्वर्ड बिज़नेस रिव्यू से...

गलतियों को टाला नहीं जा सकता है, लेकिन कोई भी इन्हें करना नहीं चाहेगा। अच्छी बात यह है कि अगर गलतियों से ठीक से निपटा जाए तो इन्हें सुधारा जा सकता है। गलतियों का मतलब यह नहीं है कि कॅरिअर खत्म हो गया। अगर कोई गलती हो जाए तो इन तीन तरीकों से इसे ठीक किया जा सकता है। पहला, गलती मानें। गलती को छिपाना या इसके महत्व को कम करना कॅरिअर के लिए घातक हो सकता है। गलती में खुद की भूमिका की जिम्मेदारी लें और रक्षात्मक नहीं बनें। दूसरा, जरूरी बदलाव करें। गलतियां सीखने का अहम मौका देती हैं। अपने बॉस और अन्य संबंधित पक्षों को बताएं कि आप अगली बार क्या अलग करने जा रहे हैं। तीसरा, गलतियों के कारण फिर जोखिम लेने से हिचकें नहीं। गलती को भूलकर भविष्य की ओर देखें। जब भी कोई फैसला लें तो खुद से पूछें कि यह सही था अथवा नहीं। ऐसा करना यह तय करने में फायदेमंद हो सकता है कि आप सही राह पर हैं या नहीं, लेकिन अगर गलत वक्त पर सेकंड-गेस करते हैं तो यह महत्वपूर्ण कमिटमेंट करने से रोक सकता है। अधिकांश संवेदनशील मौकों पर खुद से सवाल न पूछें। इसकी बजाय जब आप दिमागी रूप से सही स्थिति में हों तो उस फैसले की आलोचनात्मक समीक्षा करें। उदाहरण के तौर पर कॉन्फ्रेंस रूप में प्रवेश करने के दौरान विचार न करें कि बैठकर के दौरान ज्यादा भागीदारी की योजनाटाल देनी चाहिए अथवा नहीं। इसकी बजाय खुद से कहें बैठक में 10 मिन्ट सवाल करूंगा। इस तरह समय तय कर देने से सेंकड-गेस आप बार बार करने की बजाय एक ही बार करने लगेंगे।

मैं महा दुखों से बच गया

पाप के अत्यन्त भयानक और दुखदाई मार्ग में मुझे फेरने वाले, मेरे इस दुनियां में सबसे बढ़कर हितकारी, उपकारी कल्याणकारी सम्बन्धी।

दिली नम्रता, गहरी श्रद्धा, और भक्ति भाव से भर कर आपकी पवित्र चरण धूल में सिर रख कर आशीर्वाद प्रार्थना करता हूं।

आपके श्री चरणों में आने से पहले मैं केवल शारीरिक प्रवृतियों और पाश्विक वासनाओं का एक पुतला था। मैं इन्द्रिय सुख लाभ की वासना रखता था, मान व यश लाभ की वासना रखता था, धन पदार्थ लाभ की वासना रखता था, ऐश्वर्य लाभ की वासना रखता था। इसके सिवाय मेरे अस्तित्व के भीतर न ही कोई इच्छा पैदा होती थी और न ही उसकी तृप्ति के लिए कोई हरकत करता था। उपरोक्त पाश्विक प्रवृतियों को पूरा करके और पाश्विक वासनाओं की तृप्ति के सामानों को पाकर या पाने का यत्न करके मेरे भीतर दिनों दिन केवल पाशविक वासनाएं ही बढ़ती जाती थीं, और इसीलिए मेरी प्रत्येक चिन्ता, प्रत्येक सोच विचार, प्रत्येक काम काज और प्रत्येक संग्राम केवल इन्हीं वासनाओं की तृप्ति के लिए होते थे। मैं अठारह वर्ष तक पढ़ा और इस काल में चार भाषाएं सीखने से मेरी समझ और सोच विचार की शक्ति बहुत बढ़ी। किन्तु ये भी पाश्विक वासनाओं की तृप्ति में सहायक होने लगीं। और ज्यों ज्यों मेरे पास इन वासनाओं की तृप्ति के समान बढ़ते गए वा उनकी तृप्ति के लिए अधिक आशा और सम्भावना होती गई, त्यों त्यों उन वासनाओं ने और भी खुराक पाकर खूब बलवान होना आरम्भ किया, और इसके साथ साथ मेरे दिल में इन पाश्विक वासनाओं को तृप्त करने वाले सामानों, पदार्थों और अस्तित्वों से प्यार और लगाव बढ़ता गया। उनके लाभ करने के लिए मैंने एक वा दूसरी विधि से, जैसे भी मेरा वश चल सका, यत्न करना प्रारम्भ किया।

एक एक इन्द्रिय सुख लाभ करने में, एक एक पाश्विक वासना की तृप्ति के लिए मैंने क्या क्या अनुचित क्रिया और चिन्ता की और क्या क्या अनुचित कर्म किए, उससे कहां तक औरों के अधिकार छीने कहां तक औरों को पापी और मैला बनाया, कहां तक औरों को नीच गति की ओर घसीटा, और ऐसी कुल अनुचित चिन्ताएं और मैले और पापी कर्म करके कितना मैंने अपने हृदय को मैला, कठोर और महा पापी बनाया, और उसके कारण मैं आपके श्री चरणों में आकर भी लंबे काल तक ज्योति का अधिकारी ....न बन सका, यह सब कुछ मैं किसी अंश में अब देखने के योग्य हुआ हूं। मेरे भीतर की रूचियां असार और क्षणिक सुखों की चाट देकर, रात दिन मुझे मृत लोक के असार सामानों के पीछे ही घसीटती थीं। मै। सोचता था तो इन्हीं वासनाओं का अधिक से अधिक सामान एकत्र करने के लिए, मैं किसी से मिलता था तो केवल एक व दूसरी इन्हीं वासनाओं को तृप्त करने के लिए, मैं कोई काम काज करता था तो केवल इसी गर्ज़ के लिए। (कहां श्रीमान जी की यह अवस्था और कहां फिर यह फ़रमाते हैं- "प्रात: साढ़े चार बजे से लेकर रात के दस बजे तक मुश्किल से कोई ऐसे मिनट आते होंगे कि जिनमें मैं अपने या दूसरों के कल्याण साधन की कशमकश को छोड़ कर किसी और चिन्ता में प्रवृत होता हूं")। ये कुल संग्राम करके .... मेरे ऊपर इन्हीं पाश्विक वासनाओं का अधिक से अधिक अधिकार होता जाता था। वह मेरी अधिक स्वामी बनती जाती थीं, और मैं उनका अधिक से अधिक दास बनता जाता

था। .... वर्षों तक इन्हीं वासनाओं को तृप्त करने वाले सामानों, पदार्थों सम्बन्धियों, दोस्तों, रिश्तेदारों को अपना दोस्त और प्यारा समझता था। भाग कर उन्हीं के पास जाना चाहता था। उन्हीं के पास रहने में अपनी तृप्ति देखता था। .... अपने आपको सौभाग्यवान ख्याल करता था। तब इस से बढ़ कर मेरी और नीच हालत क्या हो सकती थी कि जो कुछ मेरे लिए तबाही लाने वाला था, मुझे मैला और गन्दा बनाने वाला था, उसको मैं प्यार करता था, उसको मैं दोस्त व मित्र समझता था, उसको मैं गले लगाता था...। उसको अधिक से अधिक लाभ करने के लिए मैं रात दिन भागता फिरता था...। इससे बढ़कर किसी की और क्या भयानक, नारकीय, दुखदाई और कृपापात्र अवस्था होगी कि वह खाकर और पीकर जितना यत्न करे, जितनी हरकत करे, जितना दुःख उठाए, जितना मारा मारा फिरे, जितना खर्च करे, उस कुल से वह अपने लिए अधिक से अधिक नर्क बढ़ाता जाए, दुःख और क्लेशों का सामान इकट्ठा करता जाए। रूपया कमाए किन्तु अधिक दुःखी हो जाने के लिए, विवाह करे किन्तु अपने दुःखों को बढ़ाने के लिए, बच्चे उत्पन्न करे किन्तु अपने लिए जीवन नर्क बनाने के लिए, रात दिन भान्ति भान्ति के दुख उठाकर उन सब की सेवा करे परन्तु अधिक से अधिक दुखों का भागी बनने के लिए और इस कुल सेवा के बदले में इन कुल रिश्तेदारों की ओर से नाना प्रकार से सताए जाने और दुःखी किए जाने के लिए। सचमुच ऐसी गति का मैं राही था। मेरे बड़े धन्य भाग्य कि चलते चलते मुझे आपकी पवित्र, बहुत पवित्र, मेरे लिए इस दुनियां में सबसे बढ़ कर हितकर और कल्याणकारी चरणधूल मिल गई और मैं इस भयानक नारकीय गति में चलते चलते रुक गया। किस क़दर दुख और महा-दुखों से मैं बच गया, किस क़दर घोर नर्क और महा भयानक नर्क से मेरा छुटकारा हुआ.. मैं कुछ नहीं कर सकता। शब्दों में इसका इज़हार हो नहीं सकता। आपके महा अमूल्य उपकारों के लिए आपको क्या धन्यवाद दूं? कहां तक आपके गुण गाऊं, क्या कुछ आपकी सेवा करूं, किस क़दर आपके ऊपर बलिहार होऊं। आपके ऐसे परम हितकर और कल्याणकारी रूप में सन्मुख बहुत ही गहरी कृतज्ञता भाव से बारम्बार दण्डवत् प्रणाम करके आज के पत्र को यहीं शेष करता हूं।

एक सेवक

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,

House No. 3154, Sector 21-D, Chandigarh - 160 022

Phone : 0172 - 4638229, 2716914

योग्यता की क़दर

मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु अंहकार है और अंहकार से स्वार्थ की उत्पत्ति होती है और स्वार्थ से नीच घृणा की। प्रत्येक मनुष्य सुख अनुरागी है और सधारणता जब उसके किसी सुख पर चोट लगती है, तो नीच घृणा की उत्पत्ति होती है। उसका वह सुख चाहे कितना भी उसके लिए हानिकारक हो, और उसके विरूद्ध कहने वाला उसका कितना भी बड़ा उपकारी क्यों न हो। सुख अनुराग मनुष्य को अन्धा बना देता है, उसके सुख पर चोट लगाने वाले उपकारी के उपकार वा गुण आखों से ओझल हो जाते हैं।

बहुत विरले इन्सान ऐसे होते हैं कि जो दूसरों से बुरे स्लूक पाकर भी उनका भला सोच सकें या उनके किसी गुण की सराहना कर सकें। पिछले एक अंक में हमने नैल्सन मंडेला के विषय में लिखा था वह बहुत महान व्यक्तित्व के मालिक थे। उन्होंने अफ्रीका में गोरे काले के भेदभाव को मिटाने के लिए संर्घष शुरू किया, और उन्हें जेल में डाल दिया और 27 साल तक उन्हें जेल में यातनाएं दी गई, उनके साथ बुरे व्यवहार किए गए, उनका सारा यौवन जेल में कटा, परन्तु जब बाहर आए तो उस अफसर से भी हाथ मिलाया जो उस पाश्विक सिस्टम का पक्षपाती था, जिसको मिटाने के लिए नैलसन मंडेला ने जेल काटी थी। उन जनों को भी धन्यवाद देते हुए बाहर आए जो उन्हें यातनाएं देते रहे थे, वह गांधी जी के सच्चे अनुयायी थे।

वह केवल विरोधियों से घृणा ही नहीं करते थे बल्कि उनके गुणों की सराहना करते थे और उनका सम्मान करते थे। उनका कहना था कि हम चाहे कुछ लोगों को पसन्द करें या न करें, परन्तु उनके अच्छे गुणों के लिए सदा सम्मान रखना चाहिए। मैंगोस्थ बुथेलेज़ी उनके कट्टर विरोधी थे और वह विरोधी धड़े के लीडर थे। परन्तु लोगों की हैरानी की हद न रही जब नैलसन मंडेला ने उनको नये दक्षिणी अफ्रीका के पहले होम मिनिस्टर बना दिया। इससे भी बढ़कर नैलसन मंडेला जब विदेश जाने लगे तो अपनी जगह पर उन्हें साऊथ अफ्रीका का ऐकटिंग प्रैज़ीडैन्ट बना दिया।

जब मंडेला को पूछा गया कि आपने ऐसी ज़िम्मेदारी वाले पद पर अपने विरोधी को क्यों बिठा दिया, तो उन्हेंने कहा क्या यह सच नहीं कि बेशक वह विरोधी रहे हैं, परन्तु वह देश के योग्यतम लीडरों में से हैं? यह भी सच है मिस्टर बूथेलेज़ी और मैं कई मुद्दों पर सहमत नहीं, परन्तु यह बात उनकी बहुत सी उच्च कोटि की योग्यताओं के प्रति मुझे अन्धा नहीं बना सकती। दुनियां को समझना होगा कि साऊथ अफ्रीका में मेरे और मेरे साथियों के ईलावा भी योग्य लीडर है और यह बात हमारे देश का सम्मान बढ़ाती है।

महान लीडर उन जनों की विशेषताओं की भी सराहना करते हैं, जिन्हें हम दुश्मन समझते हैं।

मंडेला का यह दृष्टांत हमें इब्राहिम लिंकन की महानता की याद दिलाता है, इब्राहिम लिंकन अमरीका के 16 वें प्रैजीडैंट थे, उन्होंने भी अपने सबसे कट्टर अलोचक को डिफैंस सैक्रटरी बनाया था। जब उनके साथी हैरान हुए कि यह प्रैजीडैंट की मूर्खता है कि ऐसे महत्वपूर्ण पद पर अपने स्पष्ट रूप से शत्रु को बिठा दिया, तो लिंकन ने कहा, "मैं जानता हूं कि वह मुझे बिल्कुल पसन्द नहीं करता, परन्तु मुझे बताओ कि इस पद के लिए उससे योग्य कौन है?"

कनल जी ने लिखा है कि महान कारज कैसे नष्ट हो जाते हैं, मुख्य कारण इर्षा, द्वेष और नीच घृणा है। इन नीच भावों के शिकार होकर हम योग्य जनों की

योग्यताओं को नकार देते हैं और जब महान कारज अयोग्य जनों के हाथों में आ जाते हैं तो नष्ट भृष्ट हो जाते हैं।

पू० भगवान देवात्मा अपने शत्रुओं से भी घृणा नहीं करते थे बल्कि अवश्यकता पड़ने पर शत्रु की भी सहायता करने के लिए तत्पर रहते थे और यहां तक उन्होंने फरमाया है कि मुझे सताने, तड़पाने वाला जन यदि गिरा पड़ा मिल जाए, तो मैं पहला शख्स हूंगा, जो उसकी सहायता करूंगा। काश! हम भी उनके बताए र्मांग पर कुछ चलने का प्रयत्न कर सकें।

सुरजीत बराड़

सच्ची - पात्रता

एक दिन इंटरनेट पर मैंने बड़े गुलाम अली खां साहब के बारे में एक साक्षात्कार देखा। बड़े गुलाम अली खां साहब अपने ज़माने के विख्यात शास्त्रीय - संगीत के कसूर घराने के कलाकार थे, जिन्हे संगीत सम्राट तानसेन के बराबर रूतबा हासिल है। इन्टरवयू लेने वाले ने खां साहब के पौत्र से प्रश्न किया कि संगीत घराने से आपका क्या तात्पर्य है? उसने बताया कि जिस घराने में कम से कम तीन पीढ़ियों ने, तथा - दादा, पिता तथा पोते ने संगीत की विशेष सेवा की हो, ऐसा घराना संगीत - घराने, के रुतबे को प्राप्त कर लेता है तथा संगीत - घराना कहलाता है। संयुक्त - भारत में ऐसे विख्यात संगीत घराने लगभग दस है, जिनकी संगीत से सम्बंधित अपनी - अपनी विशेषताएं है, तथा अपनी - अपनी अलग पहचान है। उसने आगे बताया कि पिछली लगभग 8 या 9 पीढ़ी पहले उनके घराने के एक बुजुर्ग बाबा फाजिल पीरदाद अफगानिस्तान से संगीत की तलाश में इस तरफ (लाहौर की तरफ) आए तथा यहीं बस गए। इस तरह पीढ़ी दर पीढ़ी हमारा घराना संगीत का सफ़र तय करता रहा तथा एक संगीत - घराने के रूप में विख्यात हो गया। अब हमारे इस संगीत - घराने को कसूर - घराना कहते है। कसूर पकिस्तान में लाहौर के पास सीमा पर स्थित एक नगर है।

एकबार NDTV पर मुझे एक पाकिस्तानी - गायक कलाकार का साक्षात्कार देखने का तथा उसके विचारों का सुनने का सौभाग्य मिला, जो गुरबाणी के शब्द गाता था। उसने बताया कि हम पीढ़ी दर पीढ़ी गुरबाणी के शब्द, शायद 14 पीढ़ियों से गाते चले आ रहे है। उस गायक ने बड़े गर्व से यह भी बताया कि श्री गुरूनानक देव जी के साथ उनके दो सेवक बाला और मर्दाना में से एक के हम वंशज है। वह अपने सौभाग्य की बहुत सराहना कर रहा था कि वह ऐसे खानदान से सम्बन्ध रखता है कि जिसके पूर्वज श्री गुरू नानक देव जी के साथ जुड़े रहे है।

मुझे याद आ रहा है कि एक नौजवान जो बहुत अच्छा संगीतकार है तथा जिसने अपनी इस योग्यता के आधार पर एक बार एक संगीत प्रतियोगिता जीत ली थी तथा एक अच्छी राशी के पुरस्कार का वह अधिकारी माना गया। वह युवक क्योंकि किसी संगीत - घराने से सम्बन्ध नहीं रखता था, इसलिए विजयी रहने के बावजूद उसे वह पुरस्कार नहीं दिया गया। मेरे एक मित्र साथी को (जो संगीत का अच्छा जानकार है) जब इस घटना के बारे में मैंने यह बात बताई और पूछा कि आयोजकों का ऐसा व्यवहार क्या उचित था? उसने फौरन उत्तर दिया कि बेशक बिलकुल ठीक था। कारण यह कि पुरस्कार जीतने वाले युवक

में एक दोष था - दोष यह कि वह बेगुरा अर्थात् गुरू वहीन यानी कि उसका कोई गुरू नहीं था। पाठक मेरा आशय समझ गए होंगे कि आधारहीन अस्तित्व अधिक देर तक कहीं टिका नहीं रह सकता। गुरू - विहीन तथा कुपात्र व्यक्ति जीवन में सच्ची सफलता प्राप्त नहीं कर सकता।

आज से प्राय 36 वर्ष पहले की बात है। मैंने संगीत कार्यालय, हाथरस (यू.पी.) को एक पत्र लिखकर यह प्रार्थना की कि कृप्या वह अपने कार्यालय से प्रकाशित होने वाली संगीत नामक पत्रिका मेरे नाम पर जारी करने का कष्ट करें। मेरे आश्चर्य की कोई सीमा न रही जब उन्होंने मुझे पत्र लिख कर यह पूछा कि मैं कौन से संगीत - घराने से सम्बन्ध रखता हूं तथा इस विषय में मेरी क्या - क्या उब्लाब्धियाँ है? इस उत्तर को पढ़ कर मैं बहुत लज्जित हुआ तथा उन्हें कोई उचित उत्तर न दे सका। इस तरह मैं एक बहुत अच्छी संगीत पत्रिका से लाभ उठाने से वंचित रह गया, क्योंकि इस पत्रिका के लिए मुझे अनाधिकारी माना गया।

उपरोक्त उदाहरणों से यह बिलकुल स्पष्ट है कि जब तक कोई जन सच्ची - पात्रता (अधिकार - तत्व) को प्राप्त नहीं लेता, तब तक जीवन में वह मनवांछित फल भी नहीं पा सकता। जीवन में गुरू का होना भी नितांत आवश्यक है।

मनुष्य स्वाभाव से ही सुख का अनुरागी है तथा दु:ख से घृणा करता है। उसका समूचा जीवन इस मूल - आकांक्षा के इर्द - गिर्द व्यतीत होता है तथा इसी आकांक्षा के कारण मनुष्य नाना प्रकार के झूठ घड़ता है तथा नीच चिताएं, नीच गतियाँ तथा पाप - कर्म करता है और अपनी आत्मा को दिनों - दिन मैली, विकार - युक्त करते रह कर एक दिन पूरी तरह नष्ट होकर मर जाता है। अपनी इस पाप - ग्रस्त आत्मिक - अवस्था से निकलने क लिए मनुष्य को सबसे बड़ी आवश्यकता है भगवान् देवात्मा की, जिसके लिए सच्ची - पात्रता का होना या लाभ करना अत्यंत आवश्यक है। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी अपने स्वयं के के बारे में लिखते है कि: -

"विश्व में कोई ऐसा पाप - कर्म नहीं था जिसके करने का मुझे अवसर मिला हो और मैंने वह न किया हो। अर्थात मैं केवल उसी पाप को करने से बचा रहा जिसके करने का मुझे अवसर नहीं मिला। पूजनीय भगवान् देवात्मा की देवज्योति तथा देवतेज को पाकर अब मेरी यह अवस्था हो गई है कि अपनी उपरोक्त महा - विनाशकारी नाना नीच - गतियों के सम्बन्ध में मोक्ष दायनी साधन करने की महा - दुर्लभ सामर्थ्य को पाकर और उन साधनों के द्वारा अपने जीवन के लिए विनाश के बहुत से मार्ग बंद, तथा अपने लिए कितने ही हित के स्त्रोत खुल गए देख कर मैं बता नहीं सकता कि मैं अपने आपको किस कदर सौभाग्यवान अनुभव करता हूं।"

श्रीमान जी आगे लिखते है कि "शरीर के किसी रोगी को स्वास्थ्य प्राप्त हो जाए, किसी निर्धन को धन मिल जाए, हाँ शरीर के विचार से यदि कोई मुर्दा फिर से ज़िंदा हो जाए और उसे सारी दुनिया की बादशाहत (राज्य) मिल जाए तो भी मैं साफ महसूस करता हूं कि उसे वह सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ जो भगवान देवात्मा की अपार कृपा से मुझे उपरोक्त सामर्थ्य को पाकर मिला हुआ महसूस होता है।" उपरोक्त शब्दों को पढ़कर हमें थोड़ा सा आभास हो सकता है कि श्रीमान देवत्व सिंह जी ने सत्य - धर्म लाभ करने के लिए सच्ची - पात्रता को कितने अच्छे रूप में अपने भीतर विकसित कर लिया था।

जिस जन को भी परम पूजनीय भगवान् देवात्मा के श्री चरणों के साथ जुड़ने का कुछ भी सौभाग्य प्राप्त हुआ है, लेकिन यदि वह अपने जन्म - दाता

माता - पिता आदि पूर्वजों से प्राप्त अधिकार - तत्व की उचित रक्षा तथा विकास नहीं कर सका, वह जन धर्म को पूर्णरूप में लाभ भी नहीं कर सका। कितने ही जन पूजनीय भगवान देवात्मा के श्रीचरणों से जुड़कर भी आत्मा का सत्य - ज्ञान तथा बोध प्राप्त नहीं कर सके तथा सत्य - मोक्ष तथा विकास लाभ करने से इसलिए वंचित रह गए क्योकि सत्य - देव के साथ उनका हार्दिक सम्बन्ध परिपक्व अवस्था तक विकसित नही हो पाया।

इस विषय में पूजनीय भगवान ने फरमाया है कि किसी आत्मा का उनके साथ सम्बन्ध दो प्रकार के सात्विक - भावों के द्वारा स्थापित हो सकता है। यथा (1) साधारण सात्विक - भाव तथा (2) मुख्य सात्विक - भाव अर्थात् देवगुरू के देवरूप के प्रति अनुराग।

भगवान लिखते है कि साधारण सात्विक - भाव जो खुद भी कई दर्जे (Levels) रखते हैं और जो यदि किसी आत्मा में पैदा हो जाएं तथा उसके नीच - भावों यथा, घमंड, इर्ष्या - द्वेष, अंह - प्रियता तथा नीच वासनाओं की गुलामी आदि के महा - हानिकारक असरों से नष्ट न हो जावें - इसके विपरीत, यदि ये साधारण सात्विक भाव आत्माओं में पवित्रता के आने से उन्नति कर सकें, तो वह उसके हृदय में मुख्य सात्विक - भावों को जागृत तथा उन्नत करने के लिए अनुकूल भूमि तैयार कर सकते है कि जिसके उत्पन्न होने के बिना कोई व्यक्ति सत्य - मोक्ष तथा उच्च - जीवन के देने वाले प्रभावों को लगातार लाभ नहीं कर सकता तथा सत्य - मोक्ष और उच्च जीवन के विकास पाने का सच्चा अधिकारी नहीं बन सकता।" दूसरे शब्दों में, जब तक मुख्य - सात्विक भाव अर्थात् देवप्रेम किसी आत्मा में पैदा न हो, तब तक उस जन में जो मृत्यु दायक शक्तियां काम कर रही है उनसे मोक्ष और जो उच्च - जीवन दायक शक्तियां उसमें नही है - उनका उस जन में जन्म तथा विकास नहीं हो सकता। जिस प्रकार किसी रोग के नष्ट किए जाने के लिए किसी दवा का सुनिश्चित मात्रा तक शरीर में जाना उस रोग के कटने के लिए परमावश्यक है, ठीक उसी प्रकार साधारण - सात्विक - भावों का मुख्य - सात्विक - भावों में परिवर्तित करना परमावश्यक है। यदि ऐसा हो सके तब ही किसी जन का देवात्मा के साथ सार तथा स्थाई सम्बन्ध हो सकता है। यदि किसी जन के साधारण सात्विक भाव उसके नाना नीच भावों का मुकाबला न कर सकें और वह नीच भावों की जद (सीमा) में आकर नष्ट हो जावें, तो फिर ऐसे जन के हृदय में मुख्य - सात्विक भाव अर्थात् देव प्रेम की उत्पत्ति नहीं हो सकती। तब निश्चय जानों कि ऐसा जन देर सवेर आत्मिक मृत्यु को प्राप्त होने के लिए अभिशप्त है।

काश! हम सब पूजनीय भगवान् देवात्मा की हमारे प्रति चिन्ताओं का कुछ न कुछ बोध प्राप्त कर सकें तथा अपने भयानक परिणाम से बचने का फिक्र कर सकें।

नोट: जैसे स्कूल में अध्यापक बच्चों को ज़ोर ज़ोर से गिनती (Counting) तथा पहाड़े (Table) बुलवाया करते हैं - जबकि ऐसा करना अध्यापक का लक्ष्य नहीं होता - यह तो बच्चों द्वारा आगामी काल में गणित सम्बन्धी समस्याओं को आसानी से समझने के लिए आवश्यक होता है, उसी प्रकार अर्चन, देव - स्तोत्र, भजन - गान, नमस्कार आदि बाह्मक - साधन करके साधारण - सात्विक - भावों के माध्यम से हमें अपने भीतर मुख्य - सात्विक भावों को उत्पन्न तथा विकसित करना अत्यन्त आवयश्क है।

(चन्द्र गुप्त)
अम्बाला शहर

कल्याण सत्संग और माता पिता दिवस

पिछले सालों की तरह इस वर्ष भी यह सत्संग 28 फरवरी से 3 मार्च तक कल्याण के एतिहासिक स्थान पर रखा गया। टैलीफोन, पत्रों वा समाचार पत्रों द्वारा इसका पता धर्म सम्बन्धियों को दिया गया। सभा स्थान को बहुत अच्छी तरह साफ करके बिछाई आदि की गई। धर्म सम्बन्धियों के ठहरने, खाने पीने का उचित प्रबन्ध किया गया। लगभग 18 स्थानों से अर्थात् मेरठ, देहरादून, नाभा, मल्लेका, केसूपुरा, पदमपुर, गंगानगर, गज सिंह पुरा, गोनियाना, भटिंडा, संगरूर, लुधियाना, कांगड़ा, लखनऊ, चण्डीगढ़, पंचकूला, अम्बाला, यमुनानगर, जंडवाला आदि से लगभग 70 के करीब धर्म सम्बन्धी तशरीफ लाए कई उच्च धर्म सम्बन्धी बर्तन साफ करने की सेवा भी करके और कई खाने बनाने में सहायता करके कई खाने खिलाने में मदद करके अपना हित साधन करते रहे। यह सेवा का दृष्य भी बहुत सुन्दर था। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, श्रीमान बूटा सिंह जी, श्रीमान बलजीत सिंह जी, श्रीमान कुलदीप सिंह जी आदि बहुत सेवाकारी होते रहे।

28 फरवरी शाम 7.30 बजे पहली सभा रखी गई। यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। उन्होंने सब आने वालों का स्वागत किया और धन्यवाद दिया। उन्होंने बताया कि पू० भगवान देवात्मा के प्रभावों की कृपा उन पर हो सकती है, जो इन प्रभावों को पाने की अवस्था में हों। सभापति जी ने गुरू चरणों में सहाय प्रार्थना की। फिर उन्होंने बताया कि बाहर के असर और हमारे सुख अनुराग हमें मदहोश कर देते हैं। बहुत ज्ञान रखकर भी हम अपने प्रति अज्ञानी रहते हैं। कई मतों का ज्ञान रखकर भी हम सच्चे धर्म के विषय में अबोधी रहते हैं।

दो धर्म सम्बन्धियों के परिवर्तन के विषय में बताया कि जो सन्मान योग्य थे, परोपकार भी करते थे, परन्तु उच्च भावों के ज्ञान से अनभिरा थे।

इसके बाद माननिय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि धर्म की इससे सादा परिभाषा यही हो सकती है कि धर्म अच्छे बनने का नाम है। गुरू दर पर आकर ही हम अच्छे बनने का प्रयत्न कर सकते हैं। उन्होंने भी यात्रियों का स्वागत किया।

1.3.2014 सुबह 9 बजे: सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। श्री सभपति जी ने बताया कि मनुष्य अन्धेरे में रहने के लिए मजबूर है। विद्या प्राप्त करके भी मनुष्य अन्धेरे में रहता है। धर्म प्राप्त न करे तो मनुष्य को क्या घाटा पड़ता है। धर्म से खाली रहकर मनुष्य दुखों में फंसता है। कहलाने वाले धर्मों को मार्कस ने बताया है कि धर्म एक अफीम की तरह हैं। धर्मों के झूठे जाल में फंसकर एक तहसीलदार साहिब की मौत हो गई एक और स्थानिय जन की मिथ्या ईलाजों से मौत हो गई।

नेचर को समझना, विकास के सिद्धान्त को समझना, अपने सुख अनुरागी स्वभाव को समझना ही सच्चा ज्ञान है। सुख अनुराग धतूरे के पौधे की तरह ज़हर पैदा करते हैं।

उच्च संगत और उच्च भावों की सारी मानवता को अवश्यकता है। हम कैसे पति, कैसे भाई, कैसे पड़ोसी, कैसी पत्नी हैं यह हमारे व्यवहार बताते हैं। पू० भगवान ने ऐसा प्रबन्ध किया है जहां पहले इन्सान बुराई छोड़ता है, फिर धीरे धीरे परोपकार के काम करता है। भारत में करप्शन, और बलात्कारों ने मनुष्य को

वहिशी बना दिया है। हमारे सौभाग्य हैं कि हमें पू० भगवान का दरबार मिल गया है।

1-3-2014, 3 बजे- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। सभापति जी ने असरों के विषय में ब्यान किया कि नेचर में प्रत्येक अस्तित्व असर छोड़ता है और ग्रहण करता है और दूसरों को भी उन असरों से प्रभावित करता है, स्वयं दूसरों के असरों से प्रभावित होता है। यह सूक्ष्म दुनियां है। सर्दी, गर्मी, सुगन्ध, दुर्गन्ध आदि के असरों को हम जानते हैं। सेहत वर्धक वातावरण के विषय में बहुत कुछ लिखा जाता है।

हमारे समाजिक, मान्सिक और आत्मिक जीवनों में भी असरों का खेल चल रहा है। उच्च वा नीच जीवन के असरों की अनेक उदाहरणें दी। एक कर्मचारी एक स्वार्थी आदमी पास कुछ समय के लिए गए, परन्तु उन्होंने तोबा कर ली और वहां के असरों से बचने के लिए भाग आए। एक जन श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी के त्याग वा तपस्या पर ग़ल्त टिपणी कर रहा था, दूसरे जन उस निन्दक से भाग खड़े हुए। ऐसे जनों से सावधान रहने की जरूरत है। महा व्यभिचारी वा स्वाद अनुरागी मनुष्यों के असरों से बचने की अवश्यकता है। बुरे असरों में रहकर ज़िन्दगियां तबाह हो जाती हैं। धन अनुरागी जनों के असर परोपकार करने पर रोक लगा देते हैं।

विचारशील स्वंय अपने लिए और अपने परिवार के लिए वातावरण चुनते हैं। पू० भगवान के असरों में रहने वाले उच्च कर्मचारियों के असर निहायत हितकर होते हैं। नीच असरों की घटनाएं बताई।

माननिय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भाई जोगा सिंह जी जो गुरू गोबिन्द सिंह जी के सिक्ख थे, उनकी कहानी बताई। इस विषय को स्पष्ट किया।

रात 8.30 बजे- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी- उन्होंने बताया कि मनुष्य सुख चाहता है, परन्तु सुखों की तृप्ति में शुभ और अशुभ का कोई बोध नहीं रखते। मनुष्य सुख चाहता और पाता रहकर वह सुखों का प्रेमी वा दास बन जाता है। जैसे जैसे सुखों का प्रेम बढ़ता है। उसकी आज़ादी कम होती जाती है। फिर एक अवस्था ऐसी आ जाती है सुखों के द्वारा दुख और हानि प्राप्त होती है, परन्तु मनुष्य उस सुख को छोड़ नहीं सकता।

उस सुख के प्रेम में चाहे उसके पिता, माता, भाई, पत्नी, इज्ज़त, सेहत और जान की कुर्बानी (कीमत) देनी पड़े, वह इतना अन्धकार ग्रस्त हो जाता है कि सब से बेमुख हो जाता है और सुख का ही सगा हो जाता है। एक आदमी ने अपनी दूसरी शादी की चाह में पिता को नहर में डुबो दिया, क्योंकि उसका पिता उसके सुख में विघ्नकारी था। एक लड़की ने धन के लोभ में सारे परिवार को ख़त्म कर दिया। एक लड़की ने अपनी शादी में रूकावट समझकर अपने छोटे भाई को जान से मार दिया। नीच सुखों की तस्वीर बहुत भयानक है। अफसोस कि इस दोष युक्त स्वभाव को दिखाने वाला कोई नहीं। परम पू० भगवान देवात्मा के दर पर आकर उनकी ज्योति में अपना सुख अनुरागी रूप दिखाई देता है। अधिकारी आत्मा अपने नीच सुखों से मोक्ष पाते हैं।

फिर माननिय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने इस सम्बन्ध में एक अमीर, बेहद शरीफ, ईमानदार व्यक्ति की दर्दनाक कथा सुनाई, जो धन के अनुचित अधिकार से बहुत दुखों में फंस गए। ब्लड प्रैशर, अध रंग वा हार्ट अटैक के शिकार हुए। ज़्यादा अमीर होना कई बार दुखों को घर बना देता है। आख़िर वह अमीर वक्त से पहले मौत का शिकार हो गया। एक और

व्यक्ति को लालच ने जेल पहुंचा दिता। इन सुख अनुरागों का रूप बहुत भयानक है।

3 – 3 – 2014, सुबह 9 बजे – सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। सभापति जी ने बताया कि जैसे पत्थरों की गुणवत्ता के हिसाब से बहुत श्रेणीयां होती हैं, उसी प्रकार मनुष्य के स्तर हैं। पहला स्तर पशु लैवल है, जिसमें धनवान, विद्वान भी पशु लैवल पर जीते हैं। कई सूरतों में पशु से भी नीचा जीवन व्यतीत करते हैं। जब व्यक्ति दूसरों के गुणों, महानता और सुन्दतर को देखने के योग्य हो जाता है तो उसके जीवन का सतर दूसरे लैवल पर आ जाता है। मनुष्य ज्यों ज्यों दूसरों की महानता देखता जाता है तो स्वयं अपने आप को उन जैसा नहीं देखता तो उसका हृदय झुकता जाता है, वह दीन बन जाता है। इस सच्ची दीनता उसके श्रद्धा भाव द्वारा पैदा होती है। यह मनुष्य जीवन का तीसरा लैवल है। श्रीमान जी ने एक बीबी के गुणों का वर्णन किया जो घर में काम करती है। श्रद्धा भाव के बिना लोग देव समाज के कर्मचारियों को पहचान नहीं सकते। श्रीमान गुरूबख्श सिंह जी को बहुत कम लोगों ने पहचाना है। श्रद्धेय श्री कनल जी की पत्नी उनका परोपकारी और महान रूप देखती थी। फिर उन्होंने श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी के श्रद्धा वा भक्ति भाव का वर्णन किया। एक लड़की जो खेड़ा साहिब की विद्यार्थी थी, जिसमें कृतज्ञता का बहुत सुन्दर भाव था उसका ज़िकर किया। जब मनुष्य दूसरों के महान रूप की नकल करते हैं तो यह चौथा लैवल है। "सकल पदार्थ हैं जग माहि, श्रद्धावहीन जन पावत नाहिं के वाक्य अनुराग श्रद्धावान जन दुनियां में बहुत कुछ हार्दिक, आत्मिक लाभ प्राप्त करता है, जबकि श्रद्धा वहीन कुछ नहीं पा सकता। बहुत प्रभावशाली सभा थी, कई जन बहुत प्रभावित होकर आंसु बहा रहे थे।

2 – 3 – 14, 3 बजे सभापति, श्रीमान बलबहादुर सिंह जी – सभापति जी ने बताया कि हमारे देश में जो धर्म प्रचलित हैं, उसमें सम्बन्ध त्याग की शिक्षा दी गई है। एकांत वास को महत्व दिया जाता है। सिमरन वा जाप पर ज़ोर दिया गया है। परम पू० भगवान देवात्मा ने फरमाया है कि सम्बन्ध त्यागने की चीज़ नहीं हैं, न ही इनको त्याग करके जीवन सम्भव है। सम्बन्धों के बिना अच्छे, बुरे की कोई समझ नहीं आती।

एक भाई को कैद हो गई, जब तक भाई जेल में रहा दूसरा भाई ज़मीन पर सोता रहा और सूखी रोटी खाता रहा। एक और भाई ने अपने भाई की नौकरी बचाने के लिए, ऐक्सीडैण्ट का इल्ज़ाम अपने ऊपर ले लिया। ऐसे भाई ही धर्म जीवन की पूंजी रखते हैं। त्याग के बिना सम्बन्ध बेहतर नहीं बनते। एक पत्नी बुढ़ापे में भी इस बात से दुखी रहती थी कि उमर के साथ उसके पति उससे खाना बनाने की सेवा नहीं लेते। ऐसे उदाहरण हमें उच्च प्रेरणा देते हैं। उच्च व्यवहारों द्वारा विरोधी को भी जीता जा सकता है। एक पड़ोसी हमेशा दूसरे पड़ोसी को धक्केबाज कहता था, परन्तु पड़ोसी उसे बिमार होने पर खेत से उठाकर ले आया उसका ईलाज करवाया, उनका सम्बन्ध ठीक हो गया और झगड़े का कारण उसने अपने आप को समझा।

इस प्रकार उन्होंने बहुत सी घटनाएं बताई, जैसे एक मजदूर इसलिए मालिक के सामने रो रहा था कि उसका बेटा आपके घर में उतना काम नहीं करता, जितने उसे पैसे मिलते हैं, मालिक उसे प्यार वा हमदर्दी दे रहे थे। बस में यदि हम ज़रूरतमन्द को अपनी सीट दे देते हैं, तो भी यह सेवा का काम है। गुरू महाराज

ने फरमाया था कि सच्चा साधन सेवा से होता है। यह सभा बहुत प्रभावशाली थी।

रात 8.00 बजे सभापति श्रीमान बलबहादुर जी: सभापति जी ने बताया कि हम जो भी गतियां करते हैं वह अपने भावों से परिचालित होकर करते हैं। श्रद्धा शुक्रगुजारी, हमदर्दी के उच्च भाव जीवन का निर्माण करते हैं। उच्च भाव वहीन जन दुख और नर्क पैदा करते हैं। एक पति ने अपनी पत्नि को पढ़ने के लिए प्रेरित किया वह बहुत हुशियार थी और धीरे धीरे वह पढ़कर उसी स्कूल में मुख्य अध्यापिका बनकर आई जहां उसका पति चपरासी था, वह अपने पति का इतना अपमान करती कि आख़िर उसको मुख्यअध्यापिका बनाने वाले पति ने खुदकुशी कर ली। गुरू महाराज अपने सेवकों के अन्दर ऐसे भाव पैदा करते हैं, जो सम्बन्धों को स्वर्गिय बनाते हैं। दुखी माता पिता सन्मान वा श्रद्धा के व्यवहार पाते हैं। एक और बहन थी, जिसने अपनी बहन की सेवा का मौका खो दिया था, परन्तु इन असरों में आकर उसने उससे क्षमा मांगी और बहन की सेवा की।

3 – 1 – 2014, सुबह 9 बजे – सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी: - श्री सभापति जी ने बताया कि आईनस्टाईट, टैगोर और महात्मा बुद्ध को बहुत कम लोगों ने पहचाना। मानवता का और विशेष रूप से भारतियों का दुखांत है कि महान हस्तियों को नहीं पहचानते। परम पू० भगवान को भी क्या उनके परिवारिक जनों वा समाजिक जनों ने नहीं पहचाना, केवल श्रद्धेय जी, श्रीमान परमेश्वर दत्त जी, श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिहं जी, श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी जैसे चन्द जनों ने उनको कुछ पहचाना। इससे आगे श्री कनल जी, पंडित हरनरायण जी अग्निहोत्री, श्रीमान जमीयत सिंह जी, श्रीमान भाई मोहन देव जी आदि जी ने भी कुछ पहचाना। जो सही अर्थों से गुरू महाराज को पहचानेगा वह घर पर नहीं बैठ सकते, वह उनका कारज करने के लिए मजबूर होगा।

श्रीमान जी ने बताया कि जिन सम्बन्धों में सुमेल है, वहां ही धर्म है। कोई मनुष्य अपने आप नहीं बनता है, सब दूसरों की कृपा है। विश्व में कहने को Happy Father's Day, Happy Mother's Day मनाए जाते हैं। पर देवात्मा की दुनियां और है। माता पिता का जन्म दाता, पालन कर्ता, रक्षाकर्ता और शिक्षादाता रूप पू० भगवान ने देखा और सेवकों को दिखाया। इस सम्बन्ध को स्वर्गिय बनाकर धर्म का आरम्भ होता है। श्रीमान जी ने बताया कि महान इब्राहिम लिंकन अपनी मां को बहुत ऊंची दृष्टि से देखते थे। हम सब पर ही माता पिता की मेहरबानियों की बारिश हुई है, परन्तु यह दुनियां अन्धों की दुनिया है। मैं अपने माता पिता के ऋण को याद करके कई बार रोया हूं। माता पिता ने शारीरिक, शिक्षा वा मान्सिक शक्तियों का दान दिया है। हमें सभ्यता भी सिखाई है। संस्कारों वा सुन्दर भावों का ऋण है।

श्रीमान जी ने और उदाहरणों के भिन्न श्रीमान कंवर दविन्द्र सिंह जी लुक्खी की पितृ भक्ति की गाथा सुनाई। कुछ हृदय स्पर्षिय घटनाओं के बाद उन्होंने भाव प्रकाश करने के लिए कहा। उसके बाद हारों द्वारा जिनके माता पिता थे अर्चना करके चरणों में प्रणाम किया, यह दृष्य बहुत ही सुन्दर था।

भाव प्रकाश

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी: - गुरू महाराज के दर पर आने ने पहले माता पिता के उपकार और महान रूप छिपा हुआ था। उनके आगे सजदा करने के लिए सत्गुरू ने मजबूर कर दिया, उनके प्रभाव पहुंचाने

के लिए धर्म सम्बन्धियों के अनथक प्रयत्नों का फल है। अब यह रिश्ता बहुत पवित्र लगता है। माता पिता का महान ऋण महसूस होता है। अपनी अनेक ग़ल्तियां नज़र आती है, उन पर बहुत दुख होता है। माता पिता बज़ुरग होकर तड़पते चले गए, मैं महसूस करता हूं कि जितनी सेवा उनकी करनी चाहिए थी वह नहीं कर सका। दुख तो यह है हक अदा न हुआ। उनका गला भरा हुआ था और आंखों से बेइख़्तियार आंसू बहा रहे थे।

श्रीमान जगजीत सिंह जी: - सभाओं में बैठकर बहुत लाभ हुआ अनुभव हो रहा है। सम्बन्धों में ही जीवन है, सम्बन्धों में ही हम नीच बनते हैं और सम्बन्धों में ही उच्च बनते हैं। अपने बज़ुरगों के उपकार महसूस हुए हैं। हमारे श्री दादा जी, दादी जी और माता पिता जी ने बेहद मेहनत करके हमारी परवरिश की है। गरीबी के हालात में हमें छपरों में ही रहना पड़ा। उनके उपकार गुरू महाराज की कृपा से प्रतिदिन उनकी मेहरबानियां नज़र आती हैं। संघर्ष करते मेरी दादी जी का रंगरूप बिगड़ गया। गांव से आकर फिर लुधियाना में कारोबार शुरू किया। वह काम में बेईमानी को बहुत बुरा मानते थे। वह गुण उन्होंने हमें भी दिया। अपने एक साथी के साथ मिलकर काम पूरी ईमानदारी से किया। सचाई और सफाई मिली। इस निराले सत्संग के बिना मैं ऐसा न होता। मैं शराबी और मांसाहारी बन गया था। 1980 में सेवक बनने का सौभाग्य मिला। विज्ञान मूलक दृष्टिकोण मिला। मेरा सौभाग्य है कि मैं ऐसी समाज से जुड़ा हूं। मैं प्रतिदिन भगवान को प्रणाम करता हूं। हररोज़ सद्गुण चिन्तन भी करता हूं। माता पिता दिवस पर अपने माता पिता को बहुत याद किया। सभाओं में बैठकर अपने बचपन से लेकर अब तक के जीवन की ओर ध्यान गया। अपने सम्बन्धों को और सुधारने के लिए और संग्राम करूंगा।

श्रीमान जगीर सिंह जी केसूपुरा: - हमें माता पिता के प्रति कोई श्रद्धा या सन्मान का पता नहीं था। यहां आकर ही यह नई होश मिली है। यहां आकर माता पिता का रूप नज़र आया है। जब माता जी को प्रणाम करता हूं तो मां देवी का रूप नज़र आता है। मेरी माता जी ने दादी जी और दादा जी की बहुत सेवा की। माता जी दादी जी को नहलाती, खिलाती, बहुत ध्यान रखती। माता जी के उस खून की विरासत मुझे भी मिली, जिसका इस दर पर आकर कुछ विकास हुआ है। इस दर के साथ जुड़ा रहूं तो ही कुछ जीवन सफल हो सकता है। 28 फरवरी को यहां आकर नये वातावरण में सांस ले रहा हूं। नई सोच और नई सोझी आती महसूस हो रही थी, कठोर हो रहा था। श्रीमान जी के इस गांव में गुज़रते हुए प्रणाम करता आ रहा था (बहुत भावों से भरकर) मेरा आत्मिक रोगों का ईलाज हुआ है। महोत्सव के अवसर पर भी बेहद लाभ हुआ। बहुत बरकतें मिली हैं। शराब, कबाब में बर्बाद हो रहा था। मुझे गुरू के प्रभाव मिलते रहें। स्वयं बदलता रहूं और औरों को बदलते रहने में सहायक हो सकूं।

श्रीमान कुलदीप जी कल्याण: - हम तीन पुश्तों से देव समाज से जुड़े हुए है। हमारे घर से शराब, मांस, अण्डे सब कुछ उड़ा दिए हैं, इससे हम सब का बेइन्तहा भला हुआ है। हमारे यहां एक समृद्ध परिवार में शादी थी। वहां कोई हज़ार के करीब लोग शामिल थे। मेरा बेटा जो बहुत सीधा सा है, कोई 28 - 29 वर्ष का है, वह मेरे साथ था। वह उस वातावरण में दम घुटता हुआ महसूस करता था। बार बार तकाज़ा करे कि यहां से बाहर चलो, उसने वहां खड़े होकर चाय भी नहीं पी। वहां से हम जल्दी आने के लिए मजबूर हो गए। यह

केवल देव समाज के सदका है, इस लाभ का ब्यान नहीं हो सकता।

श्रीमान डाक्टर सी एस. जै. रथः – यहां आकर माता पिता जी के उपकारों की लम्बी लड़ी सामने घूमती रही। उन्होंने जन्म दिया, रक्षा की, पालना की, अपनी ताकत से बढ़कर पढ़ाई करवाई, M.B.B.S. डाक्टर बनाया, यह निरोग शरीर दिया, साथ साथ बचपन से ही अच्छे गुणों की, बड़े अच्छे भावों की शिक्षा देते रहे। पिता जी कमाई के लिए विदेश जाते और रहते। मैं उस समय 7 वर्ष का था, जब उन्हें मिला। मैंने बचपन में ही कुछ कमाने की सोची उन्होंने मुझे लिफाफा बनाना सिखाया। दुकानदार ने वह खरीदे मुझे उन्होंने पैसे की कीमत समझाई। मेहनत करने का पता लगा। बुरी तरफ जाने से रोका। पिता जी के भीतर दया भाव बहुत था, हमें भी दया करना सिखाया। एक गरीब लड़की की उस समय ढाई हज़ार रू० देकर शादी की। उन्होंने मेहनत और ईमानदारी सिखाई। मेरे माता जी भी बहुत मेहनत करती थी। कभी उन्होंने किसी की निन्दा नहीं की। मैं अपने बच्चों को वह कुछ नहीं सिखा सका। जैसे पिता जी हमें सिखाते थे। पिता जी ने आत्मिक उपकार भी किए। हमेशा पंजाबी और हिन्दी की समाजिक पत्रिकाएं मुझे भिजवाते। उन्हीं के कारण मैं सभाओं में आने लगा, इससे मेरी कुछ अध्यत्मिक उन्नति होने लगी। मुझे बचपन से ही श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी के गुण दिखाई देते रहते थे। मुझे उनका श्रद्धावान बना दिया। उनके चरणों में पढ़ने के लिए छोड़ दिया। सबसे बड़ा उपकार है कि मुझे गुरू महाराज का सेवक बना दिया। इस उपकार की अजमत ब्यान नहीं हो सकता। इस बात का बहुत दुख है (रो रोकर) माता जी के, आख़िरी दिनों में मैं उनकी सेवा नहीं कर सका, इसका सदा ही दुख रहेगा।

श्रीमान बलदेव सिंह जी मल्लेकाः – मुझे यहां आकर माता पिता के ढेरों उपकार और गुण याद आ रहे हैं। पाकिस्तान से आकर यहां बंजर ज़मीन मिली। माता जी इस सदमें से ही मर गई। पिता ने बड़ी मुसीबतों से हमें पाला बंजर ज़मीन को सुधारा। मुझे पढ़ाने के लिए भेजा तो मास्टर जी के घर चावलों का गट्टा देकर आए कि मेरे बेटे को मारना नहीं, फिर यह पढ़ने से भाग जाएगा। पिता का दुख देखकर मास्टर जी ने बहुत प्यार से पढ़ाया। मेरे पिता जी ने मोगे से हम दोनों भाईयों के लिए बड़े सुन्दर स्वैटर खरीदे, फिर पैसे न बचे। ढाई सौ मील पैदल चलकर आए। थक टूट गए। उनकी थकावट गर्म पानी में नमक डाल डालकर, उसमें टांगे रखवकर उतारी। ऐसे माता पिता का हम क्या कर्ज़ा उतार सकते हैं।

देव समाज के विरूद्ध बातें सुन सुनकर हमारे अन्दर मिथ्या विश्वास पैदा हो गया था, इससे दूर ही रहते।

हमारे पिता जी बहुत बिमार हो गए। उन्होंने हस्पताल जाने से मना कर दिया, मैं लोक लाज मारा उनकी सेवा करता, यह देव समाज में आने से पता लगा कि जैसे करनी चाहिए थी, वह नहीं कर सका। मैं शराबी बन गया, स्वंय भांति भांति की शराब निकालता। मैं ससुराल जाकर पूरी बोतल शराब की पी गया, फिर और पी गया। मैं अपनी सास के ऊपर गिर गया, उसके ऊपर उल्टियां कर दी। मेरी सास ने मेरे नाक में ऊंगलियां डालकर उल्टी निकाली, इस प्रकार मुझे सांस लेने के योग्य बनाया। उसने मेरे कमरे के दरवाजे के आगे चारपाई लगा ली, मेरी रखवाली करती रहीं।

देव समाज में आकर मैं ससुराल गया, सास की

बाजू टूट गई था। मैंने उसकी सेवा की। मुझे उनकी तकलीफ महसूस हुई। मैं अपने घर ले आया। 3 महीनें रखकर सेवा की। बहुत खुशी हुई। मुझे बड़ा सन्तोष मिला सासू मां को अच्छा सूट दिया, बहुत ज़ोर लगाने पर उन्होंने स्वीकार कर लिया। यह इस संगत की ही बरकतें हैं।

श्रीमती डा० सतिन्द्र ढिल्लों प्रिंसीपल :- सभाओं का स्तर बहुत ऊंचा था और बहुत प्रभावशाली थी। मैं देव समाज के वातावरण में जन्मी और पली हूं। मेरे माता पिता जी ने बेहद सेवा की है। मैं अपनी माता जी से तकरार करती थी कि मुझे आपने रांग काला दे दिया। माता जी इसके लिए कसूरवार समझती थी उन्होंने जो अन्य योग्यताएं दी उनके लिए धन्यवाद करती हूं। माता जी अपने रिश्तेदारों से बहुत उदारता का व्यवहार करती थी। मृत्यु पर अपनी आंखें दान में दे गई। पिता जी ने बहुत दुखी होकर रात दिन तड़प तड़प कर फार्म को सम्भाला और हमें पाला। सेवा के कामों के लिए मुझे बहुत उत्साह देते थे। उन्होंने मुझे श्रद्धा और शुक्रगुजारी के भाव दिए, जो सबसे बड़ा दान है। बड़े अच्छे बहन भाई दिए जो मेरे ऊपर सदा छाया करते हैं। आज जो कुछ भी मैं यहां बोल रही हूं, यह उनकी ही कृपा है।

एक पत्र

माननीय श्रीमान जी,

सत्य देव जी जय!

आपने कल्याण में सत्संग रख कर वास्तव में हमारा बहुत हित किया है। बहुत जरूरत होती है आत्मा को खुराक देने वाले सत्संग का रखा जाना। आपने मेरे लिए भुच्चो स्टेशन पर गाड़ी भेज कर मेरे लिवाने का प्रबन्ध किया। फिर वापिसी में भी ध्यान रखा उसके लिए आपका बहुत बहुत धन्यवाद! श्रीमान बलबहादुर जी के घर ठहरकर घर जैसा ही लगा। मुझे रूपिन्द्र बहन जी के बारीकी से गुण देखने का मौका मिला। इतनी अधिक शान्ति, इतनी अधिक सेवाकारी धन्य हैं वो देवी उनके आगे झुकती रहीं। मैंने भी इन गुणों को स्वयं में लाना है ऐसी प्रेरणा ली है। काश मैं भगवन का अधिक बल पाकर ऐसा कर सकूँ।

अहो भाग्य सतगुरू तुम्हें मैंने पाया, तेरे फैजों का गीत जान गाया।

सचमुच इस पवित्र भूमि पर आने का इसे नमन करने का मौका पाकर मैं धन्य धन्य हुई जिस भूमि पर मेरे सतगुरू के चरण पड़े हैं जहाँ पर मेरे भगवन के हाथों से लगाए दो वृक्ष आज भी सुरक्षित खड़े हैं जहाँ पर बड़े बड़े कर्मचारियों के चरण पड़े हैं, उन्होंने यहां सभाएं करवाई हैं। यहां पर आकर भजनों के द्वारा तथा सभाओं के द्वारा बहुत लाभ हुआ। एक एक सभा ऐसे प्रतीत होती थी जैसे मेरे लिए ही करवाई गई हो, मेरी आत्मिक अवस्था को दिखाती थी। मेरी सुख अनुरागी प्रकृति का मुझे स्पष्ट रूप से बोध हुआ, मैं ये भी जानती हूँ ये सब यहां के उच्च असरों के कारण हुआ है। मैं स्वयं के सुख अनुराग के कारण, यानि अपने को कष्ट नहीं देना चाहती मुझ में पर कहीं है ही नहीं ये मुझे पहले दिन ही दिखाई दिया था। दूसरी बात नजर आई मैं बड़े भाई के लिए lip sympathy ही करती रहीं, किया कुछ नहीं, उनका परलोक गमन भी

Published on 5th of the month
20
WPP - Regd. Postal No.CHD (0077) 2012-14
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

इन्ही हालातों में ही गया। श्री गुरूबख्श सिंह जी की श्रीमान जी को कहीं बात ने गुझे यह मेरी lip sympathy स्पष्ट रूप से दिखाई कि भलेमानस तू ऊपर ऊपर से बातें करता हैं, मैंने भी ये पाप किया है, भाई के लिए कुछ नहीं किया, ऐसे उपकारी भाई जिन्होंने मुझे देवसमाज दिखाई।

मैंने बर्तन धोने वाले भैय्या भी के गुण गहराई से महसूस किए। मैं जूठी दो प्लेटें भी धो न पाई, वो बेचारे इतनी धोते हैं, मैंने सोच लिया, खाकर पानी से जरूर धोकर रखूँगी। मंजी हुई तो धोनी आसान है परन्तु पहले माँझनी काफी कठिन है ये अहसास हुआ तो अब तक जितने लोगों को मेरे घर काम किया सब एक लड़ी की तरह सामने आने लगे, महसूस हुआ काम वाले से कभी नहीं उलझना, काम न पसन्द आने पर भी वो मुझे अपने से महान दिखाई देने लगे मैं बिल्कुल भी धर्मवान नहीं हूँ। क्योंकि इसका एक भी गुण मुझ में नहीं है जैसे धर्म तो हमदर्दी का नाम है, त्याग का नाम है, परोपकार का नाम है, शुकराने का नाम है। किसी भी मापदण्ड में मैं खरी नहीं उतरती।

शरीर के सुख और आलस्य सुख को छोड़ने की अधिक प्रेरणा मिली ताकि मैं निस्वार्थ सेवा कर सकूँ।

मैं अपने माता-पिता जी को भी धन्यवाद देती हूँ जिनकी दी हुई पूंजी की बदौलत मैं भगवान देवात्मा जी को कुछ न कुछ पाने लायक बनी। मुझे अच्छी शरीरिक व मानसिक शक्तियाँ दी।

मान्य श्रीमान जी का धन्यवाद करती हूँ जिनकी मेहनतों से इस भूमि पर सभाएँ सुनने का मौका मिला। यहां पर प्रबन्ध करने वालों को भी धन्यवाद देती हूँ।

अशोका (अम्बाला)

गोपाल कृष्ण गंगानगर

समाज की एक नयी किताब छपी है।

दिशा नेक राह की, जो सुरजीत बराड़ जी ने लिखी है पढ़कर हार्दिक प्रसन्नता हुई। बहुत ही सरल भाषा में गहरे विषय बताए गये हैं, इसमें घटनाएँ भी दी गयी हैं जो कि बहुत दिल हिलाने वाली हैं।

एक नये जन को यह किताब पढ़ने के लिए दी, वे भी बहुत प्रभावित हुई, पाने के बाद उन्होंने इस किताब की 10 प्रतियाँ माँगी और कहा कि बच्चों के लिए किताब बहुत उपयोगी है। एधसी किताबें बहुत कम मिलती हैं इसमें बहुत पोजिटिव थिंकिंग दी हुई है। मैंने किताबें तो बहुत पढ़ी है पर ऐसी किताब नहीं मिली है।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts